खट्टर को सता रही है ईएसआई मेडिकल कॉलेज की याद

फ़रीदाबाद (म.मो.) हरियाणा के हर ज़िले में मेडिकल कॉलेज खोलने के खोखले दावे करने वाले राज्य के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को यहां के ईएसआई मेडिकल कॉलेज की याद रह-रहकर सता रही है। गत पखवाड़े केन्द्रीय श्रम (राज्य) मन्त्री बंडारू दत्तात्रेय चंडीगढ़ खट्टर से मिलने पहुंचे तो नींद से जागे अफ़ीमची की भांति बातों-बातों में खट्टर ने दत्तात्रेय से पूछ लिया कि भई वह फ़रीदाबाद वाला मेडिकल कॉलेज कब दे रहे हो हमें? दत्तात्रेय ने भी दूसरे पीनक में डूबे अफ़ीमची की तरह कह दिया कि दिखवा लेते हैं? कब तक हो सकता है।

विदित है कि उक्त दोनों महानुभाव आरएसएस के प्रचारक थे। संघ का प्रचार करते-करते दोनों के भागों छीका टूट गया और एक मुख्यमंत्री व दूसरा केन्द्रीय मन्त्री बन बैठा। इन दोनों के बौद्धिक स्तर में भी पूरी समानता है। सरकारी काम-काज की समझ न इन्हें है न उन्हे। ईएसआईसी के इस मेडिकल कॉलेज को हरियाणा सरकार चलायेगी या खुद ईएसआईसी, इसको लेकर हुई सारी बहस कानून-कायदे व नियम आदि सुधी पाठक डेढ वर्ष पूर्व मज़दूर मोर्चा में पढ चुके हैं। हरियाणा सरकार की ओर से तत्कालीन स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा सचिव राम निवास ने स्पष्ट लिख दिया था कि ....इन शर्तों पर वे इस मेडिकल कॉलेज को नहीं लेंगे। मामला समाप्त। उसके बाद ईएसआईसी ने इसे खुद चलाने की प्रक्रिया को आगे बढाया था। अब वह प्रक्रिया इतनी आगे बढ़ चुकी है कि वापस लौटाया नहीं जा सकता।

संघ प्रचारक के नाते सदैव देश की भोली-भाली जनता को बहकाते रहने वाले उक्त दोनों राजनेताओं को न तो सरकारी कानून-कायदों की कोई समझ है और कोई समझाये तो समझ सकने में असमर्थ हैं। इनका बस चले तो यह सरकार को भी संघ की तरह ही चलायें और सरकारी अफ़सरों को संघ प्रचारकों की भांति पेलें। कोई पूछे खट्टर से कि वे मेडिकल कॉलेज को ईएसआईसी से लेना क्यों चाहते हैं? विदित है कि हरियाणा राज्य में स्थित होने के नाते कॉलेज की कुल 100 सीटों में से 97 सीटें राज्य सरकार के खाते में गयी हैं, केवल 3 सीट ही ईएसआई कार्डहोल्डरों के बच्चों को मिली थीं। इस अस्पताल में इलाज भी हरियाणा निवासियों का ही हो रहा है।

किसी भी मेडिकल कॉलेज को चलाने-चलाने का वार्षिक खर्च कम से कम 500 करोड़ बैठता है, यदि सही ढंग से चलाया जाय तो। इस कॉलेज को हथियाने की बात करने वाली खट्टर सरकार से अपने दो सरकारी मेडिकल कॉलेज - मेवात और खानपुर-तो धनाभाव के कारण सही ढंग से चल नहीं पा रहे, सपने देखते हैं इस मेडिकल कॉलेज को हथियाने के। गत 5 वर्षों से करनाल में बन रहा मेडिकल कॉलेज इनसे चालू नहीं हो पा रहा और डींगे हांकते हैं लम्बी-लम्बी। फ़िर भी यदि मेडिकल कॉलेज बनाने का इतना ही शौक है तो इसी ज़िले में बंद पड़े गोल्ड फ़ील्ड मेडिकल कॉलेज को क्यों नहीं अधिग्रहीत करके चला लेते? दरअसल इनको तो सब कुछ बना बनाया कोई दे दे जिस पर ये अपनी चौधर एवं दुकानदारी चला सकें।

खट्टर को यदि राज्य की जनता के स्वास्थ्य की ज़रा भी चिंता होती तो उनकी सरकार ईएसआई हैल्थ केयर का बजट 125-150 करोड़ बनाने की बजाय 800 करोड़ बना कर पर्याप्त संख्या में डॉक्टरों व स्टॉफ़ की नियुक्ति करती और तमाम तरह के आवश्यक उपकरण खरीदकर इन अस्पतालों में लगाती। विदित है कि उक्त 800 करोड़ के बजट में से खट्टर सरकार को तो मात्र 100 करोड़ ही खर्च करने पड़ते, शेष 700 करोड़ ईएसआईसी की ओर से आते। परन्तु यह निकम्मी सरकार अपने 70-80 करोड़ बचाने के चक्कर में ईएसआई हैल्थ केयर का बजट ही 125-150 करोड़ तक का बनाती है। इसी शहर के सेक्टर 8 में बने ईएसआई अस्पताल की क्षमता आसानी से 200-300 बेड की करी जा सकती है लेकिन कर रखी है मात्र 50 बेड की और उसके लिये भी न तो पर्याप्त डॉक्टर व स्टाफ़ हैं और न ही आवश्यक उपकरण। केवल बातों की सुहाली बनाना खूब जानते हैं खट्टर जी, क्योंकि संघ ने सिखाया ही यही है।

ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज अस्पताल के कौन-कौन से अफ़सर जेल जायेंगे

फ़रीदाबाद (म.मो.) एनएच-3 स्थित इस अस्पताल में कम से कम दो स्थिर व दो चलती-फ़िरती एक्सरे मशीन, दो अल्ट्रा सांउंड व एक-एक सीटी स्कैन व एमआरआई मशीनों की जरूरत है। इनके अभाव में बीमार मज़दूरों को या तो लम्बी-लम्बी डेट दे दी जाती हैं या प्राइवेट अस्पतालों में रैफ़र कर दिया जाता है। क्योंकि उक्त आवश्यक उपकरणों की जगह यहां केवल एक घिसी-पिटी अल्ट्रा सांऊंड मशीन व एक बाबा आदम के जमाने की एक्सरे मशीन है। एक्सरे मशीन करीब 36 साल पुरानी है जो अक्सर खराब तो रहती ही है, इसका परिचालन भी खतरे से खाली नहीं है।

विदित है कि एक्सरे मशीन एटॉमिक ऊर्जा के द्वारा काम करती है। ऊर्जा का यह स्रोत जितना लाभप्रद है, थोड़ी लापरवाही से कई गुणा खतरनाक भी साबित भी हो सकता है। इसी लिये भारत सरकार ने एटॉमिक ऊर्जा इस्तेमाल करने वाले हर उपकरण को नियन्त्रित एवं प्रमाणित करने के लिये एईआरबी (एटॉमिक एनर्जी रेगुलेटरी बोर्ड) बनाया हुआ है। एईआरबी के नियमों के अनुसार किसी भी एक्सरे मशीन को कहीं भी स्थापित एवं चालू करने से पूर्व उसका एईआरबी द्वारा निरीक्षण एवं प्रमाणिकृत करना आवश्यक है। निरीक्षण के दौरान एईआरबी यह सुनिश्चित करता है कि मशीन का इस्तेमाल हर तरह से सुरक्षित है, तभी वह प्रमाणपत्र जारी करता है।

एनएच 3 में चल रही मशीन का निरीक्षण कभी भी एईआरबी द्वारा नहीं कराया गया। यह एक गंभीर एवं दंडनीय अपराध है। इसके अलावा एइआरबी के नियमानुसार कोई भी एक्सरे मशीन 15 साल से अधिक समय तक नहीं इस्तेमाल की जा सकती। ऐसे में 36 साल से इस्तेमाल की जा रही यह मशीन अस्पताल प्रशासन के अपराध को और भी अधिक गंभीर बना देती है। इस अपराध का पता चलने पर एईआरबी अस्पताल प्रशासन के विरुद्धआपराधिक मुकदमा दर्ज करा सकता है, जिसमें दोषी अथवा दोषियों की कैद भी हो सकती है।

अपने वेतन का साढे 6 प्रतिशत देने वाले मज़दूरों का भला गया ऐसी-तैसी में, अस्पताल के ज़िम्मेवार अधिकारी यदि समय रहते नहीं जागे तो उनकी ऐसी-तैसी जरूर हो जायेगी।

ईएसआईसी विज्ञापनबाज़ी की बजाय सुविधाओं पर खर्च करे

फ़रीदाबाद (म.मो.) आजकल टीवी के लगभग सभी बड़े चैनलों पर फ़िल्म स्टार एवं भाजपा सांसद हेमा मालिनी को ईएसआईसी का विज्ञापन करते देखा जा रहा है। विज्ञापन में पहले एक फ़िल्मी गीत के बोल-...जब कोई मुश्किल आन पड़े हम देंगे साथ तेरा... बजते हैं, उसके बाद हेमा आकर कहती हैं हर मुसीबत में आपका साथी ईएसआईसी, उनके पीछे की पृष्ठभूमि में एक साफ़-सुथरा सा अस्पताल दिखता है, जिसमें एक साफ़-सुथरी चादर बिछती दिखाई जाती है और टेलिफ़ोन पर ही मरीज़ की बात सुनता भी कोई दिखता है। कुल मिलाकर विज्ञापन बहुत ही खूबसूरत एवं सुखद एहसास देने वाला है। इसके लिये हेमा मालिनी ने कितना पैसा लिया अथवा नहीं भी लिया तो भी विज्ञापन तैयार करने व चैनलों पर चलाने का खर्च सैंकड़ों करोड़ बैठता है।

समझ से बाहर है कि ईएसआईसी अस्पतालों को विज्ञापनबाज़ी की जरूरत क्यों आन पड़ी? इन्हें कहीं से 'ग्रहक' तो जुटाने नहीं होते। लाइन लगा कर मरीज़ यहां धक्के खाते मिलते हैं। ऐसे में विज्ञापनबाज़ी पर पैसा क्यों बहाया जा रहा है? एक तो वे एजेंसीज़ और टीवी चैनल जो इनके निर्माण व प्रदर्शन में शामिल हैं, ईएसआईसी वालों को मोटा कमीशन देते हैं। दूसरे, हेमा मालिनी जैसे स्टार को भी विज्ञापनों में नज़र आना जरूरी होता है। राजनीति में वे किसी सेवा के लिये नहीं, इसी मेवा के लिये ही तो आते हैं। पार्टी की सरकार होने का मतलब ही यही है कि उनकी छवि और जेब दोनों का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाय।

इस लुभावने एवं आकर्षक विज्ञापन के विपरीत मज़दूरों की दुर्दशा किसी भी ईएसआईसी अस्पताल एवं डिस्पेंसरी (खासकर हरियाणा) में देखी जा सकती है। एनएच-3 के मेडिकल कॉलेज अस्पताल की क्षमता 500 बेड से अधिक की है, लेकिन 25 जून को इस अस्पताल में दाखिल 181 मरीज़ों के लिये केवल 141 बेड ही उपलब्ध थे। लिहाज़ा ऐसे में कई बेडों पर दो-दो मरीज़ पड़े थे। ऐसे दुदर्शा-पूर्ण हालात में केवल वही मरीज़ यहां आकर भर्ती होगा जिसके पास अन्य कोई विकल्प नहीं होता। बेशक ईएसआईसी ने उसके वेतन का साढे 6 प्रतिशत छीन रखा हो लेकिन जान-बचाने व सही इलाज की तलाश में वह अन्यत्र कहीं भी भटकने को मजबूर होता है।

25 जून को ही इस संवाददाता ने सेक्टर 6 स्थित निफ़ा नामक एक फ़ैक्ट्री के पांडे नामक मज़दूर को रोते भटकते एनएच-3 के इस अस्पताल में देखा। उसकी पत्नी की अन्तड़ियों में गांठ, जो संभावित टीबी की हो सकती है, से पीड़ित है। वह रात-दिन दर्द से कराहती है। ताजमहलनुमा इस अस्पताल में पिछले एक साल से उसका कोई इलाज नहीं हो पा रहा उसे कभी एम्स दिल्ली तो कभी स्थानीय निजी अस्पतालों में धक्के खाने को भेज दिया जाता है। इस कवायद में पांडे पचासों हज़ार रुपये भी गंवा चुका है। जानकारों के अनुसार इसका इलाज ऑप्रेशन से हो सकता है। परन्तु ऑपरेशन करने के लिये फ़िलहाल यहां एक ही डॉक्टर है और एक ही ऑपरेशन कक्ष। इसी कक्ष में अन्य तमाम तरह के ऑपरेशन भी होने होते हैं, लिहाज़ा मरीज़ महीनों तक बारी आने की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

नई बिल्डिंग में 13 ऑपरेशन कक्ष हैं। बरसों से बन रही इस बिल्डिंग में फ़िलहाल 2 ही कक्ष तैयार हुए हैं। लेकिन उनके लिये ऑपरेशन टेबल नहीं थी। अब ऑपरेशन टेबल आ गयी हैं तो एनेस्थिसिया की मशीन नहीं है, जब वह मशीन आ जायेगी तो फ़िर उसको जोड़ने के लिये केबल की याद आयेगी। इस बीच कोई न कोई डॉक्टर, इस ड्रामे से तंग आकर नौकरी छोड़ जायेगा। मतलब यह कि देश भर के मज़दूरों से वसूले गये 40 हज़ार करोड़ पर कुंडली मारे बैठे नालायक अफ़सरों ने मज़दूरों को चिकित्सा सुविधा नहीं देनी, खाली हेमा मालिनी से खूबसूरत विज्ञापनबाज़ी करा कर देश की जनता, खासकर मज़दूरों को धोखा देना है। वैसे धोखे में कोई आने वाला अब है नहीं सब लोग विज्ञापनबाज़ी की अपेक्षा ज़मीनी हकीकत को बखूबी देख, समझ व भुगत रहे हैं।

मंदिर से मिलता है लूट कमाई का प्रसाद .

फरीदाबाद (म.मो.) एनएच-5 मेन मार्किट में स्थित शिव मंदिर इन दिनों अपने ही बिठाए गए दुकानदारों के किए कब्जों से परेशान है। पिछले कई बरसों से मंदिर में बनी दुकानों पर बैठे किराएदारों ने गैर-कानूनी तरीके से मनमानी कर रहे हैं। मात्र 800 से 1000 रुपया किराया देकर लाखों रुपया की कमाई कर रहे हैं। दुकानदारों ने दुकानों के बाहर फुटपाथ पर कई-कई फुट तक कब्ज़ा कर सामान रखा हुआ है जो शाम के समय जाम का सबसे बड़ा कारण बनता है। वहीं दुकानदार वेद भाटिया एक रेहड़ी-पटरी लगाने वाले से 9000 रुपये मासिक किराया वसूलता आ रहा है। लेकिन मंदिर को वही 800 रुपया मासिक देता है।

हद तो तब हो गई जब भाटिया इन दिनों मंदिर की दुकान ही मोटे दामों (25 लाख रुपया) में बेचने के लिए प्रोपर्टी डीलरों के चक्कर लगा रहा है। वही भाटिया की दुकान को देखने के लिए व खरीद-फ़रोख्त के लिये एनएच-5 के कई प्रोपर्टी डीलर भी रोज़ाना पहुंच कर मंदिर की वो दुकान जो भाटिया ने कब्ज़ा रखी है के 20 लाख लगा चुके हैं। वहीं ये खरीद-फरोख्त भाटिया कोई चोरी-छिपे नहीं बल्कि मंदिर की सदस्य कमेटी की जानकारी में डालकर कर रहा है। वहीं मंदिर की संस्था के सदस्य बंसीलाल कुकरेजा ने भी बरसों से मंदिर की एक दुकान पर कब्ज़ा कर प्लास्टिक के माल की दुकान खोल रखी है। जिसका वह 800 रुपया मासिक किराया देता है। लेकिन दुकान के करीब 10 से 12 फुट तक फुटपाथ पर कब्ज़ा कर रखा है। इसी कब्ज़े को लेकर हाल ही में बंसीलाल व उसके बेटे सन्नी ने अपने पड़ोसी ओबराय की जमकर पिटाई भी की थी। जबकि ओबराय का कसूर सिर्फ़ इतना था कि उसने बंसीलाल द्वारा कब्ज़ाये फुटपाथ का विरोध किया था।

कुछ समय पहले मंदिर के एक दुकान को चुप करके लाखों रुपये में बेच दिया गया। व इस दुकान की खरीद-फरोख्त में लाखों रुपया की दलाली भी मंदिर संस्था के एक सदस्य को दी गई थी। वही जानकारों का कहना है कि मंदिर की ये दुकाने बिकने का विरोध बंसीलाल कुकरेजा इस लिए नहीं कर रहा है कि वो भी एक दुकान कब्ज़ा करके बैठा है। कभी कोई न कोई उसे भी 20-30 लाख रुपया देने वाला आयेगा।